।। ढुँडियाँ को संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ढुँडियाँ को संवाद लिखंते ||

|| साखी ||

दया पाळ इण नांव बिन || जीव मोख किम जाय ||
क्हे सुखदेव सुण ढुंडियां || याँ को भेव बताय ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैनसाधु(ढुँढियाँ)से पुछ्ते है कि हे,जैन साधू तूम देह से किसी की जानते-अजानते हिंसा नही हो यह सोचकर मन से और तन से दया पालते हो और दया पालनेसे आवागमनके चक्करसे निकलकर मोक्ष मे पहुँच जावोगे यह सोचते हो तो मोक्ष पहुँचानेवाले केवल नाम रटे बगैर दया पालने से मोक्ष मे कैसे पहुँचोगे यह भेद मुझे समजावो । ||१||

दया पुंन को मूळ हे || पुंन भुक्तो देहे धार ||
क्हे सुखदेव सुण ध्रम सुं || किस बिध उत्तरे पार ||२||

माया मे जैसे क्ररता पालना यह पाप का मूल है वैसेही माया मे दया पालना यह पूण्य होने का मुल है । क्रुरता से जैसे माया का देह धारन करके नरक मे पाप भोगना पड्ता वैसेही दया के कारण पांच तत्व का माया का देह धारन करके स्वर्ग मे पुण्य भोगना पड्ता । ऐसे माया के दया धर्म से माया के पार केवल मे कैसे पहुँचोगे माया तो केवल मे पहुँचती नही फिर माया से काल के पार कैसे पहुँचोगे ।||२||

नांव आसरे बाहिरो || जीव ब्रम्ह नही होय ||
क्हे सुखदेव सुण ढुँडियां || भेद बताऊँ तोय ||३||

केवल नाम के आधार बिना केवलमे समाने सरीखा कोरा ब्रम्ह नही होता । दया यह माया धर्म पालनेसे जीव का मन, ५ आत्मा और उसके सभी कर्म ये माया जीवब्रम्हको छोड्ती नही इसकारण जीव माया ही बना रहता जीव ब्रम्ह नही बनता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधु(ढुँढियाँ)को कहते है कि जीव ब्रम्ह यह दया कर्मसे नही बनता वह जिस केवल नामके भेदसे बनता वह भेद मुझे मालूम है वह मै तूझे बताता हूँ,तू यह समज ।||३||

दया क्रम हे हद का || सुख दु:ख भुक्तो जोय ||
क्हे सुखदेव बेहद कूं || नॉव न केवळ होय ||४||

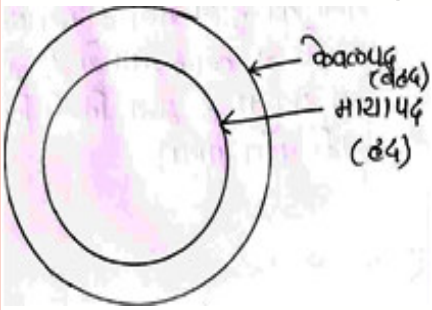

परापरी से दो पद है ।
एक हद का माया का पद और दुजा माया के परे का केवल पद । माया का हद का पद यह आदि से काल के मूख मे है और केवल का बेहद का पद यह आदि से काल के परे है । दया कर्म यह हद मे याने काल के मूख मे रखनेवाला कर्म है । इस दया कर्म से शरीर छूटने के बाद स्वर्ग मे माया के सुख और जनमने-मरने के काल

के दु:ख जगत मे भोगता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैनसाधू(ढुँढ्यिाँ)को कहते है कि,जहाँ जनमने–मरने का दु:ख नही है ऐसे बेहद पद मे न केवल नाम से ही जीव जा सकता है अन्य किसी विधीसे नही पहुँच पाता ।।।४।।

दया कहाँ लग पाळसी ।। सुण समझाऊँ तोय ।।
जीव बिना सुखराम क्हे ।। जीव न जीवे कोय ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधु(ढुँढियाँ)को कहते है की तुम दया पालते हो वह दया पालने की भी मर्यादा है । साधक दया कुछ मर्यादा के परे नही पाल सकता । जैसे जिसने जिसने माया का शरीर धारन किया है उसे जीव ही खाने पड्ते । जीव नही खाये तो जीव जिंदा ही नही रहता,मर जाता । फरक इतना ही है कि दया पालनेवाला मनुष्य जिसे कम से कम कष्ट पड्ेगो ऐसे गेहू,चावल,दाल,ऐसे जीव खाता तो क्रुर मनुष्य चलते–फिरते जिन्हे काटते समय महाकष्ट पहुँचते ऐसे ग्रहन करता परंतु दया पालनेवाला और क्रुर दोनो भी जीव ही ग्रहन करते है । इसप्रकार दया पालनेवाले को बिना जीव खाये जिंदा रहना संभव नही है और जीव खाने पे किये हुये पाप माया के जगत मे भोगे बगैर छुटते नही ।।।५।।

पाँच तत्त को आप ही ।। करो पाँच कोई अहार ।।
दया पाळे किण रीत सूं ।। क्हे सुखदेव बिचार ।।६।।

हर जीव आकाश,वायू,अग्नी,जल,पृथ्वी इन पांच तत्व के बने है । इस जीव के पांच तत्व जिंदा रखनेके लिये पांच तत्वका आहार देना पड्ता और वह आहार पांच तत्व आकाश,वायू , अग्नी,जल,पृथ्वी इन तत्वोसे सिधे नही मिलता । वह पांच तत्वके बने हुये जीव के देह से ही लेना पड्ता । इसलिये जीव को जिंदा रखने के लिये जीव खाना पड्ता और जीव खाते तो जीव मरते ऐसे जीव मारने मे दया कौनसे रितसे पाले जाती यह बात जैन साधू तुम मुझे समजावे । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधू से पुछ्ते है ।।।६।।

नव लख जळ मे जीव हे ।। सो पीवो तम आँण ।।
क्हे सुखदेव सुण ढुँड़िया ।। दया किसी बिध जाँण ।।७।।

सभी केवली संत,जैन धर्म तथा वेद शास्त्र,पुराण ये सभी कहते है कि,९ लाख जीव जल मे रमते है,रहते है,जनमते है,मरते है । उनसे जनमे हूये अंडे जल मे ही रहते है और जल मे ही बडे होते है,वही जल तुम पिते हो । जल पिने से जल मे रहनेवाले जीवो पे दया होती या उन जीवो की हिंसा होती यह समजो और दया होती तो कैसे होती यह मुझे ज्ञान से समजावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू(ढुँढियाँ)से पुछा ।।।७।।

सरब जीव सम जीव जळ ।। सो पीवो कन नांहे ।।

क्हे सुखदेव सुण ढुँडिया || समझ सोच मन मांहे ||८||

सभी अन्य पांच तत्व के जीवो के समान ही पांच तत्व के जीव जल मे रहते है । वही जल तूम पिते हो । उससे जानते-अजानते आँखे से न दिखनेवाले जीव जल के द्वारा पेट मे आते है । वे जीव तुम्हारे पेट मे ही पेट के ॲसिड से मरते है । जीव मरे की हिंसा होती फिर जीवो पे दया कैसे पाले जाती यह निजमन मे ज्ञान से सोच समजकर तूम जैनसाधू(ढुँढियाँ)मुझे बतावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधू को पूछ्ते है ।||८||

पिरथी का सुण जीव रे || बीस लाख सुण होय ||
क्हे सुखदेव धर पर चलो || दया क्हाँ रही जोय ||९||

ऐसे ही २० लाख प्रकारके जीव पृथ्वी पे रहते है । कुछ जीव चिटी मकोडेसे भी छोटे रहते है । तुम धरती पे एक जगहसे दूजे जगह चलते जाते जो उसमे जीव मरते है । यह आँखो से दिखता है फिर भी जीव न मरे यह टालने पे भी हर समय टाले नही जाता । कही ना कही परिस्थिती वश जीव मरते ही मरते है फिर जीवे पे कोरी दया कहाँ रही यह मुझे समजावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधू को पूछ रहे ।||९||

जीव दया के कारणे || मुख बुँद्यो तम आय ||
क्हे सुखदेव नासा खुली || दया कांहाँ तम माय ||१०||

जीवो पे दया रखने के लिये मुख से निकले हुये बाष्प वायुसे सुक्ष्म जीव मरे नही इसलिए मुँह पट्टी बांधते हो परंतु जिंदा रहने के लिये साँस लेने-छोडनेके लिये नाक खुल्ली रखना पडता । जितनी साँस मुख से छोडते थे उतनी ही साँस नाक से छोडते हो,कम नही छोडते हो । अगर मुख के साँस छोडने से सुक्ष्म जीव मरते है तो नाक के साँस छोडने पे भी कुछ ना कुछ सुक्ष्म जीव मरेगे ही फिर मुँहपट्टी बांधने से हिंसा कहाँ रुकी हिंसा हुई फिर तुम्हारा दया पालने का कर्म पूरा कहाँ हुवा यह तूम मुझे बतावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधू को पूछ रहे है ।||१०||

पाँच आत्मा आप मे || जे कस मारो नित ||
क्हे सुखदेव सुण ढुँडिया || कांहा दया पर चित ||११||

आकाश,वायू,अग्नी.जल.पृथ्वीसे बनी हुई पांचो आत्मा आपके देह मे देह के साथ आयी है । तुम इन आत्मावो को चित रखकर याने ध्यान रखकर नित्य तपाते हो कष्ट देते हो और तूम ही ज्ञान से कहते हो की यह हिंसा है,दया नही है फिर ऐसा कर्म करने मे तूम्हारे चितमे दया कहाँ है । यह मुझे समजावो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू से कहाँ । ||११||

प्रथम पांचुँ आतमा || सुण तेरे हे घट माँय ||
क्हे सुखदेव याँने कसो || दया किसी बिध क्राय ||१२||

जनमते पांच आत्मा तूम्हारे देह मे आयी है । अन्य किसी पे दया करने के सर्व प्रथम तो पांचो आत्मा पे दया से शुरुवात होनी चाहिये । वैसा तो नही करते हो उलटा उन्हें कष्ट देते हो फिर तूम्हारे मे दया कहाँ से आयी यह मुझे समजावो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू से कहाँ ।।।१२।।

प्रथम कलपे बाप माय ।। जोरू रोवे जोय ।।
क्हे सुखदेव सुण ढुँडियां ।। दया रही कांहां तोय ।।१३।।

माँ–बाप बुढे है वे तुम्हारे आसरे की जरुरत से तलमल रहे है,पत्नी है उसे पती के आसरे की जरुरत है,पुत्र–पुत्री है उन्हे पिता के आसरे की जरुरत है ये सभी रो रहे और तुम उन्हें तलमलते,रोते छोड्कर भेष धारन किये हो । इसप्रकारके भेष धारन करनेमे दया कहाँ रही? यह मुझे समजावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू से कहाँ ।।।१३।।

तिरपणी में जळ न्हावता ।। मारो जीव अपार ।।
क्हे सुखदेव सुण ढुँडियां ।। दया कांहा तम लार ।।१४।।

लकडी से बने हुये तिरपनी के जल से न्हाते हो उसमे अपार जीव मारते हो तो तुम्हारे मे दया कहाँ रही यह मुझे ज्ञान से समजावो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू से कहाँ ।।।१४।।

दया क्षमा अर शील कूं ।। सजे सुरग नर जाय ।।
क्हे सुखदेव सुण ढुँडियां ।। बिषे रस वाँ खाय ।।१५।।

दया,क्षमा तथा शिल जो साधता है और स्वर्ग मे पहुँचता है और वहाँ जाकर विषयरस खाता है वह महा निर्वाण पद नही पहुँचता है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू को कहाँ ।।।१५।।

शीळ तप कूँ साज के ।। सुरग लोक नर जाय ।।
यांहा छाड़े सुखराम के ।। देव लोक में खाय ।।१६।।

ऐसे शिल तप कू साधनेवाला साधक स्वर्गलोक जाता है और वहाँ यहाँ जो विषयरस त्यागे थे वे ही भरपेट नाना विधी से खाता है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू से कहाँ ।।।१६।।

देव लोक सुख भुक्त के ।। उलट पड़े धर आय ।।
पीछे सुण सुखराम के ।। चहुँ खाण मे जाय ।।१७।।

वह साधक देवलोक मे विषयरस के सुख भोगता और वहाँ तप से प्राप्त हुये पुण्य खतम् होने के बाद धरती पे आकर जरायुज,अंड्ज,अंकुर,उद्विज ऐसे चार खाणीयो के ८४००००० योनी मे ४३२०००० सालतक जन्म–मरने का पलपल दु:ख भोगता है यह तू समजा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू से कहाँ ।।।१७।।

तपसूं उलटी इंद्रियां ।। बळा कार सुण होय ।।
क्हे सुखदेव बिन नांवरे ।। मुक्त न व्हेली कोय ।।१८।।

वासना से मुक्त होने के लिये जीव शिल तप करते परंतु शिल तप से मनुष्य की इंद्रियाँ निर्बल नही होती उलटी बलवान बनती है । इसकारण जीव वासना से मुक्त होकर केवल वैरागी नही बनता । केवल वैरागी सिर्फ केवल नाम से होता । केवल नाम छोड्कर अन्य किसी विधी से केवल वैरागी नही बनता उलटा जादा विषयो का वासनिक बनता और आवागमन में रहकर दु:ख भोगता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधू को समजा रहे है ।।।१८।।

में तुज बूजुं ढुँडिया ।। यां को अरथ निहार ।।
चादर ओघो तिरपणी ।। यां सिर ही क्रतार ।।१९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधू(ढुँढियाँ)को ज्ञान से बिचार करने को कहते की, तुम चादर ओढने को इस्तेमाल करते हो,जलके लिये तिरपनी रखते हो । ये चादर, तिरपनी वस्तू का बनानेवाला कोई और कर्तार है या नही यह ध्यान मे लावो ।।।१९।।

प्रोटण हारा क्रम हे ।। घड़िया सो करतार ।।
काठ सूत ज्यूं ब्रम्ह हे ।। जळ ज्यूं शिर भरतार ।।२०।।

प्रोट्नहारा याने तिरपनी चादर यह कर्म है । तिरपनी चादर घडनेवाला काठ व सुत है मतलब काठ,सुत इनका करतार है । इस काठ व सुत को घडनेवाला जल है व जल को घडनेवाला व सतस्वरुप ब्रम्ह है ।।।२०।।

जळ उपर ज्युँ तेज हे ।। तेज ऊपरे बाय ।।
बाय ऊपरे आकाश ज्यूँ ।। ता शिर अवगत गाय ।।२१।।

जैसे जल के उपर जल को घडनेवाली अग्नी माया है,अग्नी के उपर अग्नी को घडनेवाली वायु माया है,वायु के उपर वायु को घडनेवाली आकाश माया है वैसेही आकाश माया के उपर आकाश माया को घडनेवाला अविगत है यह ज्ञान से समजो ।।।२१।।

तन को खावंद स्वास हे ।। सासा अंछया होय ।।
अंछया खावंद ब्रम्ह हे ।। क्रमा को मन जोय ।।२२।।

देहका मालिक साँस है कारण साँस है तो देह जिंदा है । साँसकी इच्छा यह मालिक है । इच्छा का सतस्वरुप ब्रम्ह यह मालिक है और इसीप्रकार कर्म का मालिक मन है। मन चाहता वैसा जीव कर्म करता ।।।२२।।

आद जिके दिन ऊपना ।। तब क्या क्रम था लार ।।
किण सूं पांचुँ प्रगटया ।। सो मुझ कहो बिचार ।।२३।।

यह जीव आदि सर्वप्रथम जिस दिन उत्पन्न हुवा उस समय जीव के साथ कोई भी पहलेके किये गये कर्म नही थे । कर्म तो जीव उत्पन्न होनेके बादमें हुये फिर ये पांचो तत्व

आकाश, वायू ,अग्नी,जल,पृथ्वी किससे उत्पन्न हुये इसका ज्ञानसे बिचार करके मुझे बतावो ।।।२३।।

म्हा प्रळे में पाँच ही ।। बिले होय सब जाण ।।
पाछा क्याँ सूं प्रगटे ।। सो बिध कहे मुज आण ।।२४।।

हर महाप्रलय मे पांचो तत्व समाप्त हो जाते है और ये पुन: कौन प्रगट करता यह मुझे ज्ञान विधी से समजावो ।।।२४।।

भीड़ पड़े तब देव में ।। जब सुर करे पुकार ।।
क्हे सुखदेवजी जब प्रगटे ।। सांई सिरझण हार ।।२५।।

ब्रम्हा,विष्णू,महादेव इन देवतावो पे जब संकट पड्ता है तब ये देवता किसकी पुकार करते है ? पुकार करने पे कौन प्रगट होता है ? वह है सभी का सिरजनहार याने करतार याने उत्पत्ती करनेवाला केवल उसके नामका रटन करनेसे काल के दु:खो से जीव मुक्त होता है । तब उसका धरती पे चार खाणो मे जनम लेने का चक्कर छुटता है और वह जीव जहाँ काल नही पहुँचता,कर्म नही पहुँचते ऐसे महा निर्वाण पद में पहुँचता है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैने साधू से कहाँ ।।।२५।।

कुंडल्यो ।।

ज्ञान खड्ग अर आगरे ।। अेता पखा न कोय ।।
ज्यां ज्यां सेच्यां साँचरे ।। त्यां त्यां सेंपट होय ।।२६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञान से जैन साधू को समजाते है की,ज्ञान,तलवार और आग इन तीनो का कोई पक्ष नही है । ये तीनो ही जिधर-जिधर जायेंगे उधर-उधर सफाचट करते जायेगे ।।।२६।।

त्यां त्या संपट होय ।। आ परो कबून जाणे ।।
आ अणभे की रीत ।। न्याव अरथां पर आणे ।।२७।।

ये तीनो ही यह अपना है या पराया है ऐसा कभी नही जानते । ये तीनो किसीका पक्ष नही लेते । इसीप्रकार की अनभे ज्ञान याने केवल के ज्ञान की रित है । यह अनभे ज्ञान याने केवल ज्ञान माया क्या काल क्या,विज्ञान वैरागी सतस्वरुप क्या इसमे का भाँती भाँती से अंतर बताकर महानिर्वाण सतस्वरुप के वैराग्य विज्ञान पे जीव की समज लाता है । यही समज अनभे विज्ञानी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगतके जैन नर-नारी,ज्ञानी,ध्यानी तथा जगत के सभी अन्य नर-नारी,ज्ञानी,ध्यानी को लाने को समजा रहे है ।।।२७।।

यां मे बुरो न माँनिये ।। जे कजी आप में होय ।।
ज्ञान खड्ग अर आगरे ।। अेता पखा न कोय ।।२८।।

(पक्षपात किसीसे भी नही रखेगा),इसमें कोई बुरा मत मानो,अपने अन्दर यदी

कसर(कमी) है,तो यह ज्ञान,किसी का भी पक्षपात नही करते हुए,सत्य कहेगा,(अपने अन्दर कसर होने से, उसका बुरा नही मानते हुए,अपनी कसर निकाल लेनी चाहिए),कारण ज्ञान,तलवार और आग ये तीनों ही,पक्ष पात नही करते है । ।। २८ ।।

।। पद ।।

में तुज बू झुँ ढुँडियां ।। मूवा जळ किम होय ।।
भेद बतायर चालियो ।। गुर की सोगन तोय ।।टेर।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधू ने कहाँ की हम जो जल पिते है वह जल मृतक रहता है याने जगतके नर-नारी के काम का नही रहता है । तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जैन साधू को पूछा की जगतके नर-नारीयोके काम मे नही आता इसलिए जल मरता है यह कैसे हो सकता है ? इसका भेद मुझे बतावो । जैन साधू जल कैसे मृतक होता है यह भेद न बताते क्रोध मे आकर जाने लगता है तब उसे ज्ञान से सही समझे इसलिए उसे उसके गुरु की सोगन देकर रुकवाते है । वह आगे ज्ञान चर्चा बढाते है (राजस्थानमे गुरुको बहुत महत्व रहता है । गुरु की सोगन यह सबसे बडा अस्त्र होता है) ।।टेर।।

पाप पुन्न बिन दोस सूं ।। किस बिध जीमे आण ।।
निकमो अन किम जायसी ।। सो मुज कहोनी बखाण ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को जैन साधू कहता है,हम जो अन्न खाते उसमे पुण्य नही रहता । यह अन्न जिसके घरमे बना है,उनके जरुरतसे अधिक होता है ऐसा बेकार किसी के काम मे न पडनेवाला अन्न रहता है । इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने उसे पुछा की जीव के बिना अन्न नही बनता तो वह रसोई पाप के बिना नही बनी और रसोई बनाए बगैर मनुष्य खाना नही खा सकता मतलब भोजन के लिए बनाई हुयी रसोई बिना पाप की नही रहती । वह घरके लिए उनके जरुरतसे अधिक है परंतु तुम छोडके अन्य कोई भी खायेगा तो उसकी भुख मिटेगी या नही?जैसे घरको छोडकर वही भोजन दुजेके क्षुधा शांतीके काम आता वैसे तुम्हारे काम आया फिर वह अन्न निकम्मा कैसे हुवा?वह अन्न किसी काम में आ सकता मतलब निकम्मा नही हुवा । अगर निकम्मा नही तो उसमे का जीव मरने का पाप दोष नष्ट भी नही हुवा?फिर वह अन्न जो खायेगा उसे यह पाप दोष लगेगा ही लगेगा इसमे कोई फरक नही है यह ज्ञानसे समजो ।।।१।।

तुं पीवे जिण नीर कूं ।। पावे बन कूं लाय ।।
वो फळ फूलां आवसी ।। कन वो निर्फळ जाय ।।२।।

हम मरा हुवा पानी मतलब किसीके काम मे नही आनेवाला पानी पिते है ऐसा तुम कहते हो । अगर वह पानी मनुष्य जिवोको छोडकर पेड पौधोके जीवो को दिया तो उन पेड पौधो की प्यास बुझेगी या नही? वह पानी पिनेसे पेड को जिंदा पेड के समान फल-फुल आयेंगे या

नही?या मरे हुए पेड्के समान फल-फुल नही आयेंगे ऐसा होगा क्या यह मुझे ज्ञानसे समजावो । अगर यह जल पेड पौधे पिने से उन्हें फल-फुल आते है तो वह पानी निकम्मा कैसे हुवा? यह समजो ।।।२।।

तुज कूं देवे रोटियां ।। ज्याँ ने पुन कन पाप ।।
दोष कीसि बिध टाळिया ।। ओ अरथ कीजे आप ।।३।।

तुझे जो रोटीयाँ देते है ऐसे रोटीयाँ देनेवाले को पुण्य लगता है या पाप लगता है । अगर पुण्य लगता है तो यह दुजे को मतलब कर्म तुम्हारे उपर दोष के रुप मे खडा हुवा फिर इस कर्म दोष को कैसा निर्दोष करोगे? इसकी समज आप करो और मुझे समजावो ।।।३।।

मुख सूं झाळा नास मे ।। बहे इधक करूर ।।
मुख रोक्या सूं क्या भयो ।। जीव तुं हते जरूर ।।४।।

तुम कहते हो की मुखसे बाष्प छोडनेपे सुक्ष्म जीव मरते है । इसलिए ऐसे गरम बाष्पको रोकने के लिए मुखको बांध लिया है और वही बाष्प नाक से छोडा है परंतु विज्ञान यह बताता है की नाक से बाष्प निकलती है वह बाष्प मुखके बाष्पसे उष्ण रहता है मतलब जो बाष्प नाक से छोडते हो उस बाष्प से भी जीव तो निश्चितही जरुर मरते है । फिर मुँह पट्टी बांधनेसे तुम्हारे देह से जीव का मरना कहाँ रुका ? यह मुझे समजावो ।।।४।।

वास किया सूं दोष रे ।। जे सुण उतरे जाय ।।
तो सिंघ जासी मोख ने ।। वो दिन तीसरे खाय ।।५।।

तुम कहते हो की उपवास करने से जीव भवसागर से पार उतर जाता । ऐसा अगर है तो ज्ञान से समजो की सिंह कुद्रती ही हर तिसरे दिन खाता है,सहज मे,बिना कष्टसे उपवास करता है मतलब उपवास से पार उतरे जाता है तो सबके पहले सिंह सहजमे भवसागर से पार हुवा रहता परंतु वैसा नही होता वह अगले योनी मे पाप कर्म भोगने को ८४००००० योनी का एक शरीर धारण करता यह ज्ञान से समज में लावो ।।।५।।

अे प्रपंच सब छाड दे ।। सिंवरो सिरजण हार ।।
केहे सुखदेव सुण ढुँडिया ।। ज्युँ तुम उतरे पार ।।६।।

ये सभी चीजे ज्ञानसे समजो और मायामे रहने के ये सभी प्रपंच छोड दो और तुम्हे जिसने घडाया ऐसे सिरजनहार केवल का स्मरन करो । सिर्फ उसका स्मरन करनेसे ही तुम भवसागर से पार उतरोगे और कोई उपायसे पार नही होवोगे । उसका स्मरन करनेसे फिर कभी माया मे नही जन्मोगे और सदाके लिए महानिर्वाण पदपे निश्चल रहोगे । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को जैन साधू (ढुँढियाँ)को ज्ञानसे भाँती भाँती से समजाया ।।।६।।

।। इति ढुंडियाँ को संवाद संपूरण ।।